आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंसंपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी -413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्यसंपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

सपादक
डॉ.विजया वारद ◆ ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बराव ◆ पांडुरंग नाडकर्णी ◆ मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य ◆ जाधव वसुधा

छायाचित्र : मुखपृष्ठ विजय कुमार बैले

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय - 'इस अंक में...

संपादकीय - 'मुझे मनुष्य बनाओ' ५

आंतर भारती - १ तुका म्हणे ९

आंतर भारती - २ बसववचन १०

आंतर भारती - ३ तिरुवल्लुवर वाणी ११

चिंतन भारती - १ नए युग की नई पुकार १२

आत्म कथन- धुनी तरुणाई : नारी सहभागिता के बिना...१३

विशेष आलेख - १ मातृत्व : एक रुका हुआ फैसला १५

विशेष आलेख - २ कहानी रह जाएगी भगत पूर्ण सिंह की १७

समाचार भारती - १ शांति केन्द्रों की मुलाक़ात २०

समाचार भारती - २ शान्तिशाला शिविर २२

समाचार भारती - ३ विद्यालय बच्चों के 'मित्र' बन गये तो... २४

काव्य भारती - १ असली सवाल यही है कि.... २४

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

'मुझे मनुष्य बनाओ'

आंतर भारती के स्वप्नद्रष्टा साने गुरुजी चाहते थे कि भारतवासी अधिकाधिक भाषाएँ सीखें. उनकी दृष्टि यह थी कि लोगों में भारत की समग्र संस्कृति के प्रति सही समझ पैदा हो. लोगों में इस समझ की चेतना से सामाजिक न्याय की समस्या का भी अपने आप समाधान हो जाएगा. गुरुजी की इच्छा थी कि भारत की जनता में आपसी सद्भाव सुदृढ हो. इसके लिए उनका मानना था कि हम श्रोता की भाषा में बोलें या उनकी समझ में आनेवाली भाषा में बोलें. वक्ता और श्रोता के बीच सद्भाव या मैत्री को सुदृढ बनाने का यही मूलमंत्र है. अपनी भाषा में व्यक्त मीठे वचन श्रोता और वक्ता के बीच आत्मीयता का माहौल पैदा कर देते हैं. बहुभाषायी भारत की जनता में भावात्मक एकता, सामाजिक न्याय की चेतना को सुनिश्चित करने की दिशा में साने गुरुजी के ये विचार कालजयी हैं. साने गुरुजी ऊँच नीचे के भेद भाव को नहीं मानते थे, तथाकथित रूढ़िवादी समाज में भी अपनी माँ से जो संस्कार उन्हें मिले थे , उन्हें आजीवन वे मनसा-वाचा-कर्मणा अपनाते रहे. साने गुरुजी के विचारों के अनुरूप ही कई राष्ट्र-प्रेमियों ने भी सोचा था. कुछ लोग तो ऐसे विचारों को व्यवहार में भी अपनाकर बड़े श्रेष्ठ उदाहरण साबित हुए. ऐसे ही कर्मठ व्यक्तियों में तेलुगु के कवि, रचनाकार, बहुभाषा ज्ञानी व आत्मीय व्यक्तित्व के धनी पुट्टपर्ति नारायाणाचार्युलु का नाम बड़े आदर का साथ लिया जा सकता है.

पुट्टपर्ति नारायणाचार्युलु (१९१४-१९९०) लगभग १८ भाषाओं के ज्ञाता थे. कई भाषाओं के श्रेष्ठ वैचारिक चिंतन का उन्होंने गहन अध्ययन किया है, विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट वाड.मय को अनुसंधाता की चक्षु से परखा है, इसके परिणामस्वरूप विभिन्न भाषाओं में मौलिक सृजनात्मक लेखन किया है. अनुसंधानपूर्ण लेखन के अलावा अनुवाद कार्य भी किया है. द्रविड़ व आर्य परिवारों की प्राचीन व नवीन भाषाओं पर अधिकार प्राप्त करने के साथ-साथ

भारोपीय परिवार के कतिपय विदेशी भाषाओं पर भी उन्होंने पकड़ बनायी थी. भारत व विश्व के श्रेष्ठ वैचारिक वाड.मय के पठन के फलस्वरूप उनसे हीरे-मोती चुनकर तेलुगु पाठकों को परोसने का प्रयास किया है. भारतीय व विदेशी भाषाएँ सीखने में उनकी रुचि व तत्परता अनुकरणीय है. पुट्टपर्ति नारायणाचार्युलु का कर्मठ व्यक्तित्व साने गुरु जी के चिंतन के विकास की दिशा में एक व्यावहारिक उदाहरण है. बहुभाषा ज्ञाता होने के साथ-साथ विराट सांस्कृतिक विविधताओं के बीच एकात्मता को पहचानने की सदा तत्परता उन्होंने दर्शायी थी. उनका लेखन भी विराट है. उनकी पाँच दर्जन से अधिक मौलिक एवं शोधपरक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं और एक दर्जन से अधिक अनूदित कृतियाँ भी. संगीत और नृत्य के भी वे मर्मज्ञ थे. ७०० से अधिक संगीतात्मक गीतों की रचना भी उन्होंने की है. शिवतांडवम गेय काव्य उनकी विशिष्ट प्रतिभा का द्योतक है जो संगीत, नृत्य और साहित्य का विशिष्ट समागम है. उस काव्य का गायन भी उन्होंने स्वयं किया था जो तेलुगु भाषियों के बीच काफ़ी मशहूर है. इस गीत का हिंदी में अनुवाद उनकी पुत्री डॉ. नागपद्मिनी ने किया है, जो फिलहाल हैदराबाद के दूरदर्शन में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में सेवारत हैं.

वर्ष २०१४ पुट्टपर्ति नारायणाचार्युलु का जन्मशती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है. विराट व्यक्तित्व के धनी नारायणाचार्युलु का जन्म आंध्र प्रदेश के अनंतपूर जिले के चिय्येडु गाँव में दिनांक २८ मार्च १९१४ को हुआ था. सनातन धर्मी परिवार में पैदा होकर भी नारायणाचार्युलु ने अपने जीवन में किसी मूढ़ परंपरा को अपनाने के पक्ष में नहीं थे. उनके जीवन के ऐसे कई जीवंत उदाहरण उनकी जीवनी के लेखक शशिश्री (शेख व्यापारी रहमतुल्ला) ने साहित्य अकादमी द्वारा भारतीय साहित्यकारों की जीवनियों के प्रकाशन के क्रम में तेलुगु में प्रकाशित अपनी कृति पुट्टपर्ति नारायणाचार्य में प्रस्तुत किया है. शशिश्री कृत जीवनी सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद योग्य है. लेखक की जन्मशती के अवसर पर साहित्य अकादमी ही यह कार्य हाथ में ले तो बेहतर होगा. जीवनी लेखक ने आपबीती भी जोड़कर इस कृति को जीवंत एवं प्रामाणिक बनाया है.

शशिश्री नारायणाचार्युलु के साहित्यिक शिष्य थे. लगभग १४ वर्ष साथ थे और उनके स्वर्ग सिधारते पल तक उनके पलँग के पास ही थे. ऐसे विराट व्यक्तित्व से और उनकी रचनात्मक चेतना से परिचित होना उनकी जन्मशती के अवसर पर उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि साबित हो सकती है. नारायणाचार्युलु के विराट लेखन के संबंध में संपादकीय की चंद पक्तियों में कह पाना दुष्कर है. उनका मूल्यांकन करना भी दुस्साहस्य ही होगा. मगर उनके वैचारिक मूल्यों के अणु मात्र उदाहरण भी यहाँ काफ़ी है. अंग्रेजी में Leaves in the wind के शीर्षक से प्रकाशित उनकी एक कविता की पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं -

“GOD, if you are
Give me this boon
Make me poor
But never poor at heart
You may give me a life
But never to live among the heartless
Never make my life a toy of their devilism
… … …
Make me crystal clear
Make me human.”

(हे भगवान, यदि तुम हो / मुझे यह वरदान दो / मुझे गरीब बनाओ / मगर न हो दिल से गरीब / तुम मुझे एक ज़िंदगी तो दो / मगर हृदयहीन लोगों के बीच जीने के लिए नहीं / कदापि न बनाओ मेरी ज़िंदगी को उनकी शैतानियत का बुत /… … … …/ मुझे पारदर्शी बनाओ / मुझे इनसान बनाओ)

आज जबकि पारदर्शी व्यक्तित्व वाले बेहतर इनसानों को मुश्किल से ही ढूँढ़ पाने की स्थिति है , ऐसे में पुट्टपर्ति नारायणाचार्युलु ईश्वर से यह प्रार्थना करते

हैं मुझे गरीब बनाओ मगर हृदय से गरीब नहीं वाली पंक्ति और अंत में उनकी इच्छा का सार मुझे मनुष्य बनाओ को उनकी विराट सर्जना का सारांश हम मान सकते हैं. आज हर कोई यह ज़रूर महसूस करते हैं कि इनसानियत के लिए कई रूपों में कई खतरे मौज़ूद हैं. ऐसे में दुनिया के सार्थक अस्तित्व के लिए पारदर्शी हृदय वाले बेहतर इनसानों की बड़ी ज़रूरत है. पुट्टपर्ति नारायणाचार्युलु का विराट रचनात्मक व्यक्तित्व हर पल इनसानियत की प्रतिष्ठा के लिए प्रतिबद्ध था. उनकी वैचारिक विराटता, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और व्यावहारिक जीवन आज के संदर्भ में भी निश्चय ही प्रेरक की भूमिका निभा सकती है. इनसानियत के प्रतीक कवि, सरस्वती पुत्र की आत्मीय उपाधि से अभिहित पद्मश्री पुट्टपर्ति नारायणाचार्य को उनकी जन्मशती के अवसर पर आंतर भारती की हार्दिक श्रद्धांजली. दिनांक १ दिसंबर, १९९० को उनकी आत्मा परमात्मा में विलीन होने के क्षण तक उन्होंने एक बेहतरीन इनसान की ज़िंदगी बितायी थी. आर्थिक कठिनाई गरीबी के रूप में कभी उन्हें ज़रूर सतायी थी, मगर व्यक्तित्व के नज़र से वे कभी-भी गरीब नहीं थे. उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता सदा अनुकरणीय है. असंख्य पाठकों के आत्मीय मानस में वे अमर हैं. पुट्टपर्ति नारायणाचार्य की मौलिक पद्य-कृतियों का अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में होना अपेक्षित है. भारतीय वाड.मय धारा के निर्माण बिंदु आज तक तेलुगु पाठकों के लिए ही सुलभ हैं. अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से इन्हें पेश करने की भी कई सीमाएं हैं. उनके मधुर तेलुगु काव्य के छंद अलंकार और रसपूर्ण गरिमा अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषाओं के पाठकों को यथावत मिल पाना दुष्कर है, मगर भावानुवाद के माध्यम से पुनःसृजन ज़रूर हो सकता है. आशा है, लेखक की इस शत जयंती वर्ष में इस दिशा में भी प्रयास होगा.

क्रिसमस व आगामी २०१५ नव वर्ष की अग्रिम शुभकामनाओं सहित…

- डॉ. सी. जय शंकर बाबु

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

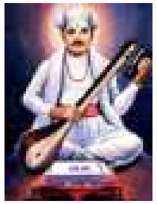

गोविंद गोविंद । मना लागलिया छंद

गोविंद गोविंद । मना लागलिया छंद ।।धृ।।
मग गोविंद ते काया । भेद नाहीं देवा तया ।।१।।
आनंदलें मन । प्रेमें पाझरती लोचन ।।२।।
तुका म्हणे आळी । जेवी नुरे चि वेगळी ।।३।।

<u>English Translation</u>

I am now intoxicated with Govinda

Govinda govinda manaa laagaliya chchanda

I am now intoxicated with the name of Govinda'

I do not notice any distinction between my body and Govinda'

The mind is full of joy, while love flows freely from the eyes.

Says TUKA, I see no duality in me.

This is similar to the metamorphosis of the butterfly.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

महात्मा बसवेश्वर वचन

- डॉ.इरेश स्वामी

मूळ कन्नड वचन :

नेरे केन्नेगे, तेरे गल्लके, शरीर गूडुवोगद मुन्न
हल्लु होगि, बेन्नु बागि, अन्यरि गे हंगागद मुन्न
काल मेले कैयनूरि कोलहिडयुद मुन्न
मुप्पिनिंदेप्पवळियद मुन्न
मृत्यू मुदिृद मुन्न
पूजिसु नम्म कूडल संगम देवन

हिन्दी काव्यानुवाद :

गालों-चेहरों पर झुर्रियां आनेके पहले
शरीर झुक आने के पहले
दाँत गिर जाने के, पीठ कमान होने के पहले
औरों को बोझ बनने के पहले
घुटनों पे हाथ रख उठने बैठने के पहले
हाथ में लाठी लेके चलने के पहले
बुढापा आने के पहले
मृत्यु के आने के पहले
पूजा करो हमारे कूडल संगम देव की

सारांश : बुढ़ापा आने से शरीर कमज़ोर पड़ता है.चेहरे तथा गालों पर झुर्रियाँ पड़ने लगती हैं. शरीर में झुकाव आता है. पीठ की कमान निकल आती है. बुढ़ापे के कारण वह औरों पर बोझ बन जाता है. उठने बैठने चलने में तकलीफहोती है. मृत्यु आने के पहले मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वर की प्रार्थना -पूजा करे. समय किसी के लिए रूकता नहीं अतः समय का महत्व जानकर, जिसने जीवन दिया है उसको याद कर लेना चाहिए.

प्रा.डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
-'विद्या' १२, ब्रह्मचैतन्य नगर
विजापूर रोड, सोलापूर - ४१३००४ (महा.)

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)

इल्लऱवियल् (गृहस्थ-धर्म)

अध्याय - ७. मक्कट् पेऱु (संतान प्राप्ति)

तन्दै महक्कु आट्रुम् नन्रि अवैयत्तु
मुन्दियिरुप्पच् चेयल् । (कुरल-६७)

सुत का हित
उन्नति योग्य, करे
पिता निश्चित ।

भावार्थ - पिता का यह कर्त्तव्य है कि वह बच्चे की उन्नति योग्य प्रगति सुनिश्चित करे।

तम्मिन् तम्मक्कळ् अरिवुडैमै मानिलत्तु
मन्नुयिर्क्केल्लाम् इनिदु । (कुरल - ६८)

माँ -बाप से भी
धीशाली बच्चे से, हो
लोक रंजित ।

भावार्थ - अपने से बढकर अपनी संतान बुध्दिमान हो, वह लोक-रंजन का कारण बनता है ।

नए युग की नई पुकार

- श्री. कोरे डी.एस.

गतांक से आगे - दलितों का आंदोलन शान्त हुआ है. उनमें दखल देने जैसी उर्मी रही नहीं ऐसी चर्चा की जाती है. जब दलितों में से कुछ घटक प्रस्थापितों के समूह जैसे व्यवहार करते हैं. तब उनके आंदोलन इस मर्यादित अर्थ से प्रस्थापितों के समुदाय के वेग से समायोजन होता है. तब दलितों के कार्यकर्ता ने ही अधिक सजगता में रहना चाहिए. दलितों पर टीका करके उनको हतोत्साह करने से कुछ हासिल नहीं होगा. डॉ. बाबा साहब आंबेडकर, गाडगे बाबा, महात्मा बस्वेश्वर तथा गुरू रविदास का वाटप विधिवत प्रस्थापितों ने जाति समाज में किया है. सामान्य जनता ऐसे छली जाल में जल्दी फंसती है. कारण छोटे छोटे समूह करने पर खतम करनाइन प्रस्थापितों को आसान हो जाता है.उन्हें फिर अपने में समाहित सुख नहीं अलग कर सकेंगे.‘‘पिछले कर्मां का उदाहरण देकर उसे लटकाए रख सकते हैं. तब दलितों में केवल जाति के लेबल से काम करने वाले कार्यकर्ताओं के सामने यह एक बड़ी चुनौति है, वैसे ही नाम आंदोलन में रहने वाले को कुछ परंपरा का बड़ा हौआ बना कर उन्हें काम से विमुख करते हैं यह भी वैसे ही धोका दायक है. कुछ प्रश्नों पर घटिया समाजवादी और वंचितों के लिए काम करने वालों के विचार अलग हो सकते हैं. परन्तु दिशा और अंतिम लक्ष्य एक होतो कार्यकर्ताओं का बिखराव वंचितों के लिए धोकादायी होता है. वाम आंदोलन ने केवल आर्थिक मांगों पर काम करके अपना मर्यादित क्षेत्र बना लिया और पूरे भारत के वंचित विविध कारणों से दूर हो गए ऐसी टीका की जाती है. परन्तु यह बागुल-बुआ बनाने का तरीका है. अगर सब वंचित वर्ग वामपंची तथा समाजवादी एक छत के नीचे संगठित हुए तो सुखसे सत्ता चला नहीं सकते. सामाजिक समता और राजकीय स्वतंत्रता जैसे एक सिक्के के दो बाजू हैं. वैसे ही वामपंथी अंबेडकर आंदोलन का नेतृत्व करने में मानसिक गड़बडी होती हैं. आपस के मतभेद की वजह से एकाधे नेता को स्वीकृति न होतो उसी आंदोलन में दूसरा कोई उसकी जगह लेवे. परंतु दुर्भाग्य से आंदोलन तितर बितर हो जाता है और वह सब समाज का न होते हुए टुकड़ टुकड़े तो हो जाते हैं.

व्यवस्था को धक्का देने वाले गिनती के विचारक हुए हैं. उनके कार्य को आगे ले जा सकें तो ले जावें. कम से कम वह काम पीछे तो न रह जाए इसकी फिक्र करें. आज जागतिकीकरण, खाजगीकरण और उदारीकरण के व्यावसायिक व्यवस्था में यह कार्य अगर कठिन भी हो तो असंभव नहीं है. पहले संपर्क के साधनों के अभाव में, शिक्षण के साधन न होने पर, सहायता के स्रोत न होने पर भी आंदोलन खड़ा हुआ, अब तो केवल वह अधिक नियोजन पूर्वक, आधुनिक साधनों का योग्य प्रयोग करके अपने को फिर से जोड़ने पडेंगे. साहित्य, कला, उद्योग, खेती, तथा जीवने के विविध घटकों पर फिर नए ढंग से जो मंदगति, चल रहा है. उसे अधिक गति दे सकें. माध्यम, इंटरनेट, शिक्षण व्यवस्थाओं का अधिक सजगता से उपयोग कर सकेंगे इस बात का गंभीरता से विचार करना होगा.

आत्म कथन : धुनी तरुणाई

आसपास के मनुष्य

- शेषराव मोहिते

हमने १९८१ के अगस्त में परभणी के मराठवाडा विद्यापीठ में'कृषक समस्या'' शिविर आयोजित किया. वह संघर्ष -वाहिनी द्वारा ही आयोजित था. डॉ. वि.म. दांडेकर, डॉ.म.गो. बोकारे, विकास साळूंके आदि महानुभावों को आमंत्रित किया था. साथ में शरद जोशी को भी. हमारा मानस था कि कृषकों की समस्याओं पर चिंतन करनेवाले, उनके लिए काम करनेवाले सभी व्यक्ति इस मंच पर एकत्र आएँ. लेकिन डॉ. दांडेकर का अपवाद अलग किया तो सभीने आने से मना कर दिया. कारण था हमने शरद जासेशी जी को भी आमंत्रित किया था. उससे पहले फरवरी में अंबेजोगाई में एक शिविर श्रीरंगराव मोरे जी ने आयोजित किया था. उसी में 'शेतकरी संगठन विचार और कार्यपध्दति'यह पुस्तक तैयार हुई. लेकिन उस समय मैं राजस्थान के सीकर में आयोजित संघर्ष वाहिनी के राष्ट्रीय शिविर के लिए गया था. इतने दूर-दूर तक घूमने के लिए पैसे पास तो होते नहीं थे. उस समय एम्.एस्.सी के डेझेरटेशिन के लिए रेफरन्स कलेक्शन प्रित्यर्थ विद्यापीठ सवासौ रुपए देता था.उतनी रकम में देहली जाकर वहां केआय.ए.आर.आय. लायब्ररी से रेफरन्स एकत्र कर लाये जा सकते थे. मैंने वह रकम उठाकर सीकर और देहली दोनों निपटाए. सीकर जाने के लिए पूर्णा -अजमेर पॅसेंजर यात्रा शुरु की. मीटर गेज रेल्वे थी. भेड-बकरियों जैसे डिब्बों में ठूसे यात्री थे. उनके साथ में थे जलाने के लिए घांस के गठ्ठर. किसी तरह ऊपर की बर्थ तक पहुँचा तो खंडवा आने के बाद ही नीचे उतरा. संध्यावेला का समय था. वहां गाडी एक घंटा रुकनेवाली थी. स्टेशन से बाहर निकलकर एक गंदे से होटल में चाय ली. वहां धूंए से काले हुए आइने में अपने आप को देखा और मैं थर्रा गया. शरीर के कपडे मैले और सिलवटों से सरोवार थे. चेहरा भूक से विकल अवस्था में था. यह मैंने अपने आपको किस दशा में पहुँचा दिया?मन में बड़ी खीज उठी. एक क्षण के लिए लगा, कहां का सीकर और क्या वहां का शिविर ? मैं यह क्या कर रहा हूँ ? साथी छात्र रातदिन लायब्ररी में बैठकर एम्.पी. एस् सी की तैयारी कर रहे हैं. अपनी

एम्.एस्.सी.तीन महिने में पूरी हो जाएगी. उसके बाद मुझे क्या बनना है? संघर्ष वाहिनी के ये लड़के -लड़कियाँ अधिक तर शहर के मध्यमवर्गीय परिवारों आयी हैं. उनके लिए ठीक है यह बगावत, क्रांति, आंतर जातीय विवाह, नौकरी न करना. मैं तो माँ -बाप का एक अकेला. उधर खेत में पसीना बहाते हुए उनकी पूरी जिन्दगी बीत रही है. उन्होंने कितनी अपेक्षाएं रखी हैं मुझझे. अगर मैं इस तरह घरबार, खेती, नौकरी सब कुछ छोडकर घर से निकल पड़ा तो गाँव की उस खेती का क्या होगा? काश्तकार के बच्चों को,जिनके बाप के पास पाच -पच्चीस एकड खेती है. इस तरह बाप के विरुध्द, उनकी मर्जी के विरुध्द जाना क्या संभव है?कई प्रश्नों से सिर सुन्न हो गया. लेकिन कुछ क्षणों के ही लिए.फिर रेल में चढ़ा.सीकर पहुॅंचने पर पूरे देश से आये लड्के -लडकियाँ मिलीं और मन की यह दुविधा कहां भाग गयी पता ही नहीं चला.

आगे ८१ के अक्तुबर में वाहिनी का राष्ट्रीय अधिवेशन लखनऊमें हुआ. वहां जाते समय मात्र अकेला न जाते हुए धर्मापुरीकर को साथ लेकर गया. वह इसलिए किफिर मन उद्विग्न न हो. वापसी पर पता चला, शेतकरी संगठन द्वारा रास्ता आंदोलन की तिथि १० नवम्बर घोषित की गयी है. इस आंदोलन की घोषणा २० सितम्बर के पिंपळगांव बसवन्न में हुए सम्मेलन में ही की गयी थी. आंदोलन की तैयार के लिए गांव-गांव जाकर सभा लेना शुरु हुआ.९नवम्बर को ही गिरपतारी हुई. उसके बाद तो पूरा समय शेतकरी संगठन के काम के लिए ही समर्पित था लेकिन मार्ग, विचार वाहिनी का ऐसा कुछ तो चलता रहा. नौकरी न करते हुए पाँच-छह साल ही मैंने काम किया. आन्तर -जातीय विवाह मात्र नहीं किया चूँकि वह पूर्व निर्धारित करने से नहीं हो सकता. लेकिन विवाह बिना दहेज का ही किया. उस कारण से ही तो घरके लोगों के साथ लम्बे समय तक अनबन रही.

वाहिनी की बैठक के लिए नागपुर गया तब शेतकरी संगठन के सराना में हुए प्रथम अधिवेशन में देखा वहां के कृषकों का उत्साह तथा शेतकरी संगठन की विचारों की उडानइनमें प्राप्त बडी शक्ति साथ में थी. आशा बगे द्वारा लिखा एक लेख पढने में आया था. नागपुर पहुँचने पर रेल्वे लाइन के पढ़े हुए पहचान के चिन्ह ही ढूढते रहा. उस दरम्यान आंदोलनऔर वाड.मय दोनों में मन हिंडोले

(पृष्ठ ३२ पर...)

मातृत्व : एक रुका हुआ फैसला

-चिन्मय मिश्र

वास्तव में यह मामला किसी विशिष्ट उद्योग या सेवा क्षेत्र तक सीमित नहीं है बल्कि यह उस खतरनाक सोच का नतीजा है जो के मनुष्य को एक संवेदनारहित जीवित इकाई में परिवर्तित कर देना चाहता है. बुध्दिमानों को समझ में आ गया है कि परिवार नामक संस्था का नष्ट होनाही इस व्यावसायिक विश्‍व की ''चरम सफलता'' होगी. अत्यधिक उत्पाद को अंतहीन उत्पादन तक पहंचाने के लिए उसे विवेकशून्य कर्मचारी और विवेकशून्य उपभोक्ताओं दोनों की ही जरुरत पडेगी. यह प्रवृत्ति छोटे तौर पर सामने आने भी लगी है. हाल ही में सरोगेसी से जन्म लिए दो बच्चों में से एक के असामान्य होने पर ऑस्ट्रेलियन दंपत्ति उस अपाहिज बच्चे को अपने साथ लिए बिना एक बच्चे के साथ अपने देश लौट गये? क्या सामान्य मातृत्वकी स्थिति मे ऐसा कर पाना भावानात्मक रूप से या कानूनी तौर पर संभव था? यहाँ पर तो बच्चा महज एक खराब ''उत्पाद'' भर था.

एक ओर भारत जैसे देशों में सरोगेसी से संबंधित कानूनों को सख्त बनाने की बात चल रही है. वहीं दूसरी ओर दुनियाभर के बडे पूंजीपति इस प्राकृतिक प्रक्रिया या भावना को एक तकनीक में बदल रहे हैं. शताब्दियों के मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने गर्भधारण जन्म तक की जटिल प्रक्रिया का बहुत विस्तृत विश्‍लेषण किया है आधुनिक तकनीकों को अपवाद के रूप में प्रयोग करने के बजाए सहूलियत में बदल देना क्या उचित है? यहीं पर एक और प्रश्‍न भी उठता है कि इस तरह हम बच्चों को जन्म देंगे या कथित ''बुद्धिमान व संवेदनशील रोबोट'' को? इस पूरी प्रक्रिया में जमाए गए अंडाणू को कई बरस पश्‍चात् उस महिला की सहूलियत के अनुसार चैतन्य किया जाएगा और फिर वह किस पुरुष के संसर्ग से एक प्रतिफल के रूप में समाने आएगा. यह भी निश्‍चित नहीं है. यानि यह पूरी प्रक्रिया कमोवेश एक प्रयोगशाला में तैयार दवा औषधि की तरह हो जाएगी, जिसमें कि आप कुछ रसायनों का संयोजन कर इन अंडाणुओं से बच्चे तैयार करेंगे, जिनसे किसी का कोई पूर्व लगाव नहीं होगा.

गौर करें तो हम पाएंगे कि इस तरह की वैचारिक गिरावट के पीछे कहीं

न कहीं स्वास्थ्य सेवाओं को व्यापार बना देना भी है. भारत के समाचार पत्रों में कृत्रिम गर्भाधान को लेकर पूरे पूरे पृष्ठ के विज्ञापनों की भाषा पर आप गौर करें तो पाएंगे कि उनमें से अधिकांश महिलाओं की मां न बन पाने की क्षमता को अपराधबोध में परिवर्तित कर देते हैं. मातृत्व की अनिवार्यता को स्थापित करने की पितृसत्तात्मक मनोवृत्ति भी पूरी दुनिया खासकर भारत सहित तीसरी दुनिया के देशों में लगातार हावी है. अत्याधिक निवेश कर बनाए गए स्पर्म या एगफ्रीजिंग बैंकों का व्यवसाय भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. यह बात भी चौंकाने वाली है कि अमेरिका के न्यूयार्क में जहां सन् २००५ में ''एग फ्रीजिंग '' के केवल ५ मामले समाने आए थे वहीं पिछले वर्ष इनकी संख्या बढकर ४०० हो गई. चिकित्सा के व्यवसाय में परिवर्तन होने का खामियाजा भी अंततः तो हमें ही भुगतना है.

मातृत्व से महिलाओं के व्यावसायिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों में पुरुषों की भूमिका या उनकी मदद लेने के प्रयासों को लेकर पूरा समाजचुप है. वह यह जताना चाहता है कि अंततः सिर्फ महिला ही बच्चे की परवरिश के लिए जिम्मेदार है. स्त्री स्वतंत्रता या मातृत्व को लेकर उसकी सहूलियत को सर्वोपरी बताना भी कहीं इसी षड्यंत्र का हिस्सा तो नहीं है? बहरहाल यह तो तय है कि इस कदम से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सरोगेसी जैसी कुप्रथाओं को बढावा मिलेगा. कैरियर की दुहाई देने वालों के समाने भारतीय महिला मुक्केबाज मैरीकाम का उदाहरण मौजूद है. यह कहा जा रहा था कि बच्चे होने के बाद उनका कैरियर समाप्त हो जाएगा. दो बच्चों के बाद उन्होंने ओलंपिक कांस्य पदक और तीसरा बच्चा होने के बाद एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता है. परंतु वैश्‍विक व्यावसायिक जगत तो किसी और मिट्टी से ही बना है और वह अपने लाभ के लिए किसी भी स्तर पर जाकर उसे न्यायोचित व क्रांतिकारी बताने में भी हिचकता नहीं है.इस सबके बीच स्त्री और संवेदना दोनों ही ठिठके से खडे हैं. रघुवीर सहाय ने लिखा भी है.

वह जवान थी, उसके जिस्म में जान थी,
पर क्या चीज टूटी पडी थी उसके चेहरे में.
क्या वह चीज हम नहीं जानते?

ही ठिठके से खडे हैं. रघुवीर सहाय ने लिखा भी है.

वह जवान थी, उसके जिस्म में जान थी,

पर क्या चीज टूटी पडी थी उसके चेहरे में.

क्या वह चीज हम नहीं जानते?

कहानी रह जाएगी भगत पूर्ण सिंह की

ओम् थानवी

भगत जी एक बार सचमुच के'धर्म संकट'में भी पड़ गये. सन् १९३१ की जनगणना के दौरान सरदार उज्ज्वल सिंह(पत्रकार खुशवंत सिंह के चाचा)ने असेम्बली में कानून पास करवा दिया कि सिख वही है'जो दस गुरुओं के अलावा और किसी को अपना गुरू नहीं मानता' भगत जी सोच में पड़ गए. 'मैंने सोचा भगवान् राम और कृष्ण मुझे कहेंगे कि हम तुम्हें अपने दस गुरुओं को मानने से नहीं रोकते, लेकिन तुम हमें क्यों छोड़ रहे हो?

लेकिन भगत जी की प्रेरणा का सबसे बड़ा. स्रोत तो उनकी माँ ही थीं. भगत जी याद करते थे कि गांव में एक दफा`जब महामारी फैली तो कैसे उनकी माँ रोगियों से मिलने घर-घर जाया करती थी. उस समय मैं अपनी माँ की गोद में होता था.

सन् १९२९ में माँ बीमार पड़ी तो भगत जी उसे लेकर गांव लौटे. वहाँ यह समझा गया कि वे पिता की सम्पत्ति से हिस्सा`लेने आए हैं और तो और, उन्हें रहने की जगह तक न मिली.जिस घर में भगत जी की माँ रहती थी, उसमें भगत जी का सौतेला भाई आ चुका था. भगत जो के शब्दों मेंः 'माँ ने कोई गिला न किया. हम गांव से लौट आए. अमृतसर आए और बेघरों की तरह वहां डेढ़ साल गुजारा.' कुछ महीने उन्होंने तरनतारन की धर्मशाला में काटे. फिर दरबार साहिब की सड़क पर माँ-बेटे उस जगह बैठते रहे जहां भिखारी बैठते थे. बाद में वे छेहरटा साहिब के गुरुद्वारे चले गए और वहां खुली जमीन परछप्पर डालकर रहे. भगत जी लंगर पकाने की सेवा करते रहे और रोटी मिलती रही.

भगत जी ब्रम्हचारी थे. उन्होंने विवाह क्यों नहीं किया, इसकी भी एक कहानी है. एक रात उनकी माँ ने कहा कि तकलीफ का जीवन हम जो गुजार रहे हैं इसमें दोष तुम्हारा नहीं, मुझसे ही पाप हुए हैं. भगत जी ने माँ से कहा -जो औरत तपती दुपहरी में गांव के बाहर चौरास्ते की पुलिया पर बैठकर मुसाफिरों को पानी पिलाती हो, ढ़ाई सौ घरों की गाय-भैंसों के पीने के लिए कुएँ से पानी खींचती हो, पीपल -बरोटा-नीम की त्रिवेणी लगाती हो, मुझसे राह के कांटे और पत्थर उठवाती हो, पक्षियों को दाना डलवाती हो, पूर्णमासी का व्रत रखकर सत्यनारायण की कथा सुनती हो, और सुबह भिक्षा के लिए आने वाले संतों से जपुजी साहिब का संथा लेती हो, वह बात सुनाई. वह बोली कि एक गर्भ गिराने पर जन्मा बच्चा सांस ले रहा था. भगत जी ने कहा'''यह पाप तो मेरे पिता ने करवाया था. तुम बेवश थीं. तुम्हारा वश चलता तो क्या तुम ऐसा करतीं?''

पर माँ के ख्याल पूर्ण सिंह बदल नहीं पाए. आखिर एक रोज बोले...'तुम्हारे मन में पाप का भूत बैठ चुका है जो निकलेगा नहीं. इसलिए आज तुम्हारे सामने मुझे यह प्रण करने की जरूरत महसूस होती है कि पुण्य -पाप के प्रायश्चित्त के लिए मैं अपनी सारी उम्र सेवा में लगा दूं.सारी उम्र कुंबारा रहूं और ह्दयकी पूरी शुध्दता से वह जीवन व्यतीत करूं'भगत जी ने यह प्रण कैसे निभाया, सब यह जानते हैं.

बेसहारों के लिए अपने आपको समर्पित करने से पहले पूर्ण सिंह लाहौर के डेहरा साहिब गुरुद्वारे में संगतें स्नान करती थीं. पानी निकालने वाले रहट से भैंसे को पूर्ण सिंह हाँकते थे. भक्तों के स्नान का इन्तजाम फिर जूठे बर्तनों को मांजने बैठते. बर्तन साफकर लंगर में सिक रही रोटियाँ पलटते. लंगर पकने पर संगतों को लंगर बरताते. इसके बाद बर्तन मांजने का सिलसिला फिर शुरु हो जाता. इस बीच लंगर के लांगरी सो जाते थे पर भगत जी नहीं सोते. क्य पता कौन मुसाफिर भूखा रह जाए. कोई तो हो जो महंत ही को जाकर बताए कि प्रशादा पूरा हो चुका और तैयार करना है. चार बजे भगत जी उन गुरुद्वारे का फर्श धोते थे. रात को लंगड फिर बरताते.

` एक रात गुरुद्वारे में कोठे की छत से एक आदमी गिर पड़ा. भगत जी

रात को ही उसे मेयो अस्पताल ले गए. तब के पंजाब में २९ जिलों का वह सबसे बड़ा अस्पताल था. दौड़भाग कर डॉक्टर ढूंढ़ और इलाज कराया. गिरने वाला चलने- फिरने लगा तो भगत जी ने अपने भीतर असीम शान्ति अनुभव की. ऐसे ही एक रोज गुरुद्वारे में अधेड व्यक्ति आया जिसके पांव में कीड़े पड़े हुए थे. भगत जी मेयो अस्पताल का नक्शा जान चुके

थे वे उसे भी वहां ले गए. अस्पताल के पलंग पर बैठकर उस मरीज ने आंखें बंद कीं

और बोला -'अब में चैन से मर सकूंगा' ये शब्द भगत जी के कलेजे में उत्तर गए. उन्होंने ठान ली कि अब मेरा आगे का जीवन लाचार, बीमार लोगों की सेवा में जाएगा. भगत जी गुरुद्वारा डेहरा साहिब से बाहर निकले. वे रोगियों और अपाहिजों को बाकायदा ढूंढ़ते थे. उनके जीवन का यह मिशन ही बन गया था.

गुरुद्वारा डेहरा साहिब शहर से बाहर था. बादशाही मसजिद और किले के बीच पौन किलोमीटर कारास्ता था. गुरुद्वारा आने वाले भक्त और मिंटो पार्क सैर को जाने वाले लोग वहां से गुजरते थे, इसलिए उस रास्ते पर बहुत से भिखारी बैठा करते थे बैठे-बैठे एक भिखारिन वहां बेदम होकर गिर पड़ी. वह कृशकाय थी और किसी को उसके बचने की उम्मीद नहीं थी. भगत जी उसे बचा नहीं सके, पर निश्चय ही उस बूढ़ी भिखारिन ने चैन से दम तोड़ा होगा. मरने से पहले लगातार छह दिन उसे हरी दस्त आती रही. भगत जी उसके दस्त वाले कपड़े धोते रहे. गर्मी के दिन थे. दस्त में चर्बी आती थी. एक कपड़ा सूखने से पहले दूसरा दस्त से भर जाता था. भगत जी कहते थेः श्रवण कुमार की कहानी ने उन्हें बहुत प्रेरणा दी. एक माँ की सेवा से प्रेरित भगत जी ने जाने कितनी माँओं की सेवा की. दीन-दुखियों की सेवा के भगत जी के प्रसंगो का पार नहीं है और सारा काम अकेले.

लाहौर में रहते हुए भगत जी ने काफी पढ़ा भी. जब भी वक्त मिलता, वे दयाल सिंह लाइब्रेरी में जा बैठते या लाला लाजपत राय की द्वारिका दास लाइब्रेरी में. जॉन रस्किन और इमरसन फिलासफर उनको बहुत भाते थे. टायसन फिलासफर भी. गांधी जी का हर लेख वे बोल-बोल कर पढ़ते थे. सन्१९२७ में गांधी जी का लेख 'उडीसा का कंकाल'पढ़कर वे जार-जार रोए थे.

बंटवारा होने पर भगत जी प्यारा सिंह को लेकर लाहौर से अमृतसर आ गए.एक शरणार्थी शिविर में रहे. धीरे-धीरे ज्यादातर शरणार्थी आबाद हो गए. शिविर में वही रह गए जो आबाद हो नहीं सकते थे-अनाथ, अकेले, बीमारी और अपाहिज लोग. शिविर सरकार ने अचानक बंद कर दिया. भगत जी ने सोचा उन्हें भी कुछ करना होगा. कटोरा उठाया और आने-जाने वाले के सामने हाथ फैला दिया. फिर एक ठिकाना भी मिल गया. अमृतसर छोड़ गए लोगों के कई घर खाली पड़े थे. एक में डेरा जमा दिया और 'पिंगलवाड़ा का काम शुरू हो गया, आज पिंगल वाडा अपने में एक बड़ी संस्था बन चुकी है.'

पजांब में आज रोज खून की होली खेली जाती है. लोगों को लगता है इन्सानियत का यहाँ लोप हो चुका. जिन्होंने आस छोड़ दी वे किसी सुबह भगत पूर्ण सिंह जी का भी नाम लें तो ताकत महसूस करेंगे. बेगुनाहों का खून बहाने वाले बर्बर बन्दूक धारियों पर शायद बेसहारों के एक मसीहा का नाम भारी पड़े.

जनसत्ता से साभार

समाचार भारती-१

शांति केन्द्रों की मुलाक़ात

इस बार के सद्भावना पर्वमें तय हुआ कि गुजरातमें ऐसे २०-२५ केन्द्र चलें जिसमें शांति और सद्भावना को लेकर काम चले. इसलिये तय हुए केन्द्रोंकी मुलाक़ात हो. इन केन्द्रोमें कैसे कार्यक्रम करना, उसके आयोजन के लिए विश्वग्राम संस्था, बासना में एक मीटींग रखी गई दि.२८-०६-२०१४ से यात्रा का प्रारंभ हुआ माणसा, विजापुर, गांधीनगर जैसे बीस केन्द्रों की मुलाक़ात का दौर चला. तुला-संजय, उमेश श्रीवास्तव और हर्षद रावलने भागलिया.

हर जगह २५ से ३० मित्र इकट्ठे हुए. वहा शांति केन्द्र के उद्देश्य की बात हुई. छात्रों के लिये तीन दिनका शांति शाला शिविर और ४०-५० शिक्षकों के लिये एक दिन के शिविर का आयोजन हो. स्थानिक परिस्थिति के अनुसार दुसरे भी कार्यक्रम तय हुए.माणसा तहसील की प्राथमिक, माध्यमिक शाला के संडास-पेशाबघर सफाई का अभियान, वंचित बच्चों के लिए संस्कार केन्द्र चलाने का तय हुआ.विजापुर में हिन्दु मुस्लिम मिलन पुस्तकालय प्रवृत्ति का कार्यक्रम तय हुआ. विजापुरशहरकी शालाओं विश्व की श्रेष्ठ बालफिल्मदर्शन,

सद्भावना संमेलन और व्यारव्यानों का साल भर का कार्यक्रम तय हुआ. साणंदमें सदभावना संमेलन. प्राथमिक शालाओमें बाल फिल्म दिखवाना और नल सरोवर विस्तारमें शिकार प्रवृत्ति बंद करने हेतुं शांतियात्रा का कार्यकम भरुच में बालमेलोंका आयोजन, दहेज बंदरगाह पर सद्भावना कार्यक्रम तय हुआ. इडर -अंधश्रध्दा निर्मूलन कार्यक्रम, आसपासकी शालाओमें विज्ञान के प्रयोग दिखवाने का कार्यक्रम तय हुआ. खेडब्रह्मा -शांति सद्भावनाको लेकर कार्यक्रम तय हुए. मोडासा चर्चा सत्र हिन्दु -मुस्लिम शालाओं विद्यार्थी विनिमय, बाल फिल्म दर्शन का कार्यक्रम तय हुआ. पाटण - चर्चासत्रों का आयोजन, कामरान स्कूल में नियमित रूप से शांतिकेन्द्र चलेगा और नियमित रुप से बैठकें चलेंगी. उझा -बाल संस्कार केन्द्र चलाना, फिल्मदर्शन, कथाकथन का कार्यक्रम तय हुआ. थरा -केन्द्रमें वंचित बच्चोंके लिये जरूरी चीजें पहुंचना, महिनेमें एक बार मिटिंग और चर्चा सत्र का आयोजन तय हुआ. पाटडी-केन्द्रमे शिक्षकोंका अच्छाग्रुप है. प्राथमिक शालाओं फिल्म दर्शन,अंधश्रध्दा निर्मूलन कार्यक्रम तथा शिक्षकोंके शिविर का आयोजन करना तय हुआ जूनागढ में बडे पैमाने पर बाल महोत्सव का आयोजन होगा. हिन्दु-मुस्लिम शालाओंमें छात्र विनिमय का कार्यक्रम करना तय हुआ है. हर महिने नियमित बैठकमें चर्चासत्रों का आयोजन होगा. सामरपाडा जि-डेडियापाडा सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ, बालमहोत्सव बालफिल्म दर्शन और शिक्षकोंकी नियमित रूपसे मिटिंग चलेगी. महेसाणा केन्द्रमें चार प्राथमिक स्कूलमें कथा कथन का कार्यक्रम नियमित रुप से चलेगा साथ में सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ सिखवानेका भी कार्यक्रम होगा. राधनपूर-केन्द्र नियमित रुप से मासिक मीटींग रखेगा. बारह मासकी बारह प्रवृत्तियां होंगी जिसमें पर्यावरण सुरक्षा, सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ, छात्र विनिमय, स्वच्छता अभियान, पुस्तकालय वगैरह प्रवृत्तियोंका आयोजन किया है.भावनगरमें सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ और गुजरात कक्षा के बालमेलेकी जिम्मेदारी ली है. वल्लभीपूरमे अंधश्रध्दा निर्मूलन बालमेला वगैरह प्रवृत्ति चलेगी. आंबला केन्द्रमें अपने आसपास के दस स्कूलोमें शान्तिकेन्द्र चलेंगे और एक वर्कशॉप भी होगा. ऐसे बीस केन्द्रोंमें मिलन समारंभ, एक दिनका शिक्षक शिविर, तीन दिनका शान्तिशाला शिविर और स्थानीय कार्यक्रम होंगे. सब मित्रोंने बड़े प्यारसे शान्तिकेन्द्रों की शुरुवात की है. अपनी निष्ठा से काम होगा.

हर्षद रावल

ई-मेल -harshadravalo@gmail.com

मो.०८१४१९७३३४१

शान्तिशाला शिविर

शालाओंमें बच्चोंमें शान्ति और सद्भावना हेतु शांन्तिशाला शिविर का आयोजन उतरबुनियादी आश्रमशाला समारपाडा जिल्हा-नर्मदामें दिनांक ०८/०७/२०१४से १२/०७/२०१४ तक चला विश्वग्राम के साथी मित्र चेतन शर्मा जो इतने वर्षो तक सामरपाडा स्कूलमें शान्ति केन्द्र चलाते हैं. १०० छात्र -छात्राओं का ये स्कूल निवासी है. पांच दिन के शिविरमें ऑइल पेइन्टिंग, दोरी पेइन्टींग ग्रीटींग, ब्लोट पेइन्टींग, महेंदी, शालाकी सघन सफाई शोभन, झाडू बनाना, कंपोस्ट खाद बनाना वगैरह प्रवृत्तियाँ हुई. बिना साधन के खेलमें बच्चों को खेल खेलनेमे बहुत मजा आया.‘‘तेन्नाली राम’’‘‘तारे जमीं पर,’’‘‘गुलीवर ट्रेवेल’’ फिल्में दिखवाई गई. अंतिम दिन हॉल को बनाई गई चीजों से सजाया गया. प्रार्थना सभामे हररोज राष्ट्रीय एकता के गाने और शान्ति सद्भावना क्या है? इसके बारमे बच्चोसे संवाद होता था. यहाँ के बच्चों में स्वयं शिस्त, विनय, सहयोग, सीखने की तीव्रता अच्छीथी पास की आश्रम शालामें खेल और सर्जनात्मक प्रवृत्तिओं का कार्यक्रम बढ़िया रहा. जब समय मिलता था तब चेतनभाई की बाईकमें बैठके जंगल मे घूमने का और आदिवासी परिवारों में जाना होता था. चेतनभाई के मित्रों से मुलाक़ात होती रही, मेरे लिए यह एक यादगार शिविर था.

शांन्तिशाला का दूसरा शिविर इडर स्थित युनिक-यु इन्टरनेट्शनल स्कूल में

दिनांक १२-०९-२०१४ से १५-०९-२०१४ शिविर चला. शिविरमें ७६ छात्र-छात्राओंने हिस्सा लिया प्रार्थना, गीत, सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ, बिना साधनके खेल, ऐसा कार्यक्रम नियमित रूप से चलता था. बच्चोंने ओरीगामीमें-टोपी, नाव वगैरेह सीखा. गीतो में ‘देश हमारा....नौ जवान...शान्ति के सिपाही ...एक जगत..’’ गीत सीखे शाम को खेलोमें इतने कितने, साथी शोध, मछली पक्कड खेल खेले गये.‘‘तेन्नाली रामा ’’की फिल्म भी दिखवाई गई. रविवार के दिन पारसभाई ने दो बजे तक नृत्य के साथ खेल खेले. बच्चोंको मनोरंजन के साथ शारीरिक व्यायाम का भी अनुभव हुआ. दो बजे के बाद का

सत्र स्थानीय मित्रोंने अंग्रेजी स्पीकींग का लिया. शाम को मैं और स्थानीय मित्र पोरो के जंगलो मे घूमने चले गये.

तीसरे दिन शान्ति क्या होती है? भीतर की शान्ति के लिए क्या करना चाहिए? समाजमें शान्ति का माहौल कैसे बनाए इसके बारेमें बच्चों के साथ बात हुई. दो-पहर से चित्र बनाना, भारत के नकशे को जोड़ना, घुमक्कड बनाना, शरीरके अंगों को जोड़ना और सुशोभन की बहुत सारी चीजें बनाने के प्राजेक्ट चलते रहे. बाद में बच्चोंने पूरे हॉल को सजाया. शाम को बच्चोंने मूल्यांकन सभा मे शिविरमें क्या अच्छा लगा उसके बारे में अपने अनुभव बताये. इस कार्यक्रम को सफल बनाने में रवीन्द्र भाई सुतार, शैलेष प्रजापति, शंकरभाई, अस्मिताबहन और अलताफ भाईने अच्छा सहयोग दिया. बच्चों में उत्साह, नया करने की वृत्ति अच्छी रही.बहुत सारे बच्चों की फरमाइश थी कि फिर से खेल खेले जायें. अंतमे साथीशोध खेल खेलने के बाद कार्यक्रम संपन्न किया. बच्चे बिदाई के समय बडे भावुक हो गये और फिर से आने का आमंत्रण भी दे दिया. पांच बजे शिक्षकों के साथ मैंने शिक्षक के अनुभव पेश किये. सबको अच्छा लगा.

हर्षद रावल

ई -मेल -harshadravalo@gmail.com

मो.०८१४१९७३३४१

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित
आन्तर भारती अन्तर्राष्ट्रीय
बाल आनंद महोत्सव
लेहरगागा (पंजाब)के छायाचित्र
मुखपृष्ठों पर. समाचार विवरण जनवरी'१५'के अंक में

समाचार भारती-३

विद्यालय बच्चों के 'मित्र' बन गये तो...

- वीणा जामकर

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसा एक समय आता है (सही देया जाय तो आना चाहिए)जब हम अपने जीने के मूल उद्देश्य पर आकर रुक जाते हैं.हमने जनम क्यों लिया? हम काम क्यों करते हैं? हम आनंद को क्यों ढूँढते रहते हैं? दुःख से दूर क्यों भागना चाहते हैं. करिअर क्यों बनाते हैं ?पैसा ही क्यों कमाते हैं?शादी क्यों करते हैं? माँ -बाप क्यों बनते हैं? स्पर्धा क्यों करते हैं? हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?

ऐसा नहीं हैं कि इसतरहके सभी प्रश्नोंके उत्तर हमें मिल नहीं पाते ! कुल मिलाकर मरनेतक सुखसे, आनंद से रहने की हरएक दौड़ धूप चलती रहती है ! फिर हर एक अपना आनंद निश्चित रूप से किस में है? वह तय करके उसी मार्ग से जीते रहता हैं. लेकिन वास्तव में इस प्रकार का आनंद का मार्ग हमसबको मिल पाता है क्या?मुझे लगता हैं कि नहीं मिल पाता.निरंतर इसे प्राप्त करके उसे डिब्बे में बंद करके रोज थोड़ा थोड़ा निकाला नहीं जा सकता. ऐसा हो ही नहीं सकता.

आनंद किसमें है?इसे तय करने पर भी बहुत कुछ होता है. पैसा, घर, गाड़ी बैंक बॅलेंस, पुरस्कार, मान-सम्मान इसमें दीर्घकालीन आनंद प्राप्त नहीं होता सब कुछ मिलता है, फिर समाप्त होता है, फिर प्राप्त करना पड़ता है,फिर समाप्त होता है...समाप्त न होनेवाला चक्र है. इससे प्राप्त होनेवाला आनंद सच्चा है लेकिन क्षणिक होता हैं, इन पलोंको पाने के लिए हम जीवन भर भागते रहते हैं, थक जाते हैं, आखिरी दिनोंमें हिसाब लगाने से साधारणतः चीजें सबके पास अधिक मात्रा में जमा रहती हैं. फिर भी कुछ कम है ऐसा लगने लगता है... क्या कम है यह समझ में नहीं आता. कई बार निराशाही पल्ले पड़ती है.

भाग्य से मुझे मेरे अबतक की छोटी -सी जिंदगी में दीर्घकालीन आनंद किस में हैं? इसे में जान गई हूँ . ऐसा लगता है कि यह आनंद होता 'देने में' हम अपने सुख के लिए कितनी भी दौड़धूप करें तो भी हमें संतोष कभी भी प्राप्त नहीं होता. लेकिन वही दौडधूप मेहनत दूसरों के लिए करेंगे तो सामने वाले के चेहरे के आनंद को देखकर जो समाधान मिलता है वह दीर्घकालीन मरनेतक टिकनेवाला होता है. हमने हमारे जीवन में बहुत लोगोंको आनंद दिया है यह एहसास ही हमारे जीने का मुख्य उद्देश्य है ऐसा मुझे लगता है.

मुझे नाटक-सिनेमा के क्षेत्र में तो बहुत ही आनंद प्राप्त होता होता है. अलग-अलग चरित्रको प्रत्यक्ष रुप में खडा करना पड़ता है. उसके लिए लगनेवाले कपड़े, मेकअप, साहित्य, वस्तुएँ, अलग-अलग प्रदेश, भाषा, सहकलाकार, इतर लोग ..मेला लगा

रहता है.इन्व्हॉल्वमेंट इतनी होती है कि कभी कभी तो सेटपर दिखनेवाली जिंदगी ही सच्ची (यथार्थ) लगने लगती है. मैं 'परिवार' की माँ अथवा संत तुकाराम की ४०० सालपूर्व की पत्नी मैं ही हूँ ऐसा लगने लगता है. और शूटिंग समाप्त होनेपर होटल के कमरे में आते ही पेट खाली हो जाता है.इतने दिन जिसप्रकार हम जी रहे थें वह सारा खतम भी होता है. कल सभी अपने अपने घर जाएँगे. हमारे में इतने दिन 'गंगा' थी,'रखमा' थी, वे सभी कहाँ चले गए?

हमारे क्षेत्रकी ये पीडादायक क्षणभंगुरता आपको नश्वरता की ओर ले जाने के लिए विवश कर सकती है. फिर भी मुझे मेरा अभिनय का काम बेहद पसंद है. ॲक्शन...कर, इन दो शब्दों के बीच का समय, मेरा सबसे प्रिय समय, जो अस्तित्व में नहीं है ऐसी काल्पनिक स्त्री को अपना शरीर, आवाज़, समझ, आत्मा देकर जिंदा बनाने की अद्भुत बात मैं इस समय कर सकती हूँ. इन दो शब्दों के बीच के समय में हम इस दुनिया में ही नहीं थे ऐसा फिर लगने लगता है. इतनी बात के लिए ही यह क्षणभंगुरता, निरंतर रहने वाली मानसिक अस्थिरता को (व्यवसाय के संदर्भ को)मैं चला लेती हूँ.

निराशा से मैं कह रही हूँ क्या?लेकिन ऐसा ही होता है...इसीलिए तो अपने बारे में मुख्य प्रश्न खड़े होते हैं उसमें भी हमारा अस्तित्व कॅमरे के रील में बंद रहता है. हम मरने के बाद भी हिलते-डुलते रहते हैं.... इसीलिए हम अमर बन गए हैं ऐसा कलाकार फील करने लगते हैं लेकिन वह अमरत्व क्षणभंगुर ही. बहुत सारे चरित्रों में हमने (अपनी क्षमता से क्यों न हो)जान डालकर खड़े करने पर भी आखिरमें 'मैं कौन?'यह प्रश्न खड़ा होता ही है. गंगा' ऐसी है, 'रखमा'ऐसी 'ताना'ऐसी है...लेकिन मैं (स्वयं)कैसी हूँ?मुझे क्या लगता है?इस प्रकार सरल प्रश्नों के उत्तर भी कई बार मेरे पास नहीं होते...लेखक के बनावटी संवाद, दिग्दर्शक की दिखावटी सूचनाएँ मुझे कई बार अव्यक्त ही रखती हैं इधर -उधर...

पिछले वर्ष मैं लातूर गई थी, रवींद्र टागोर की 'मीरा'बनकर. दृष्टिदान इस मराठी फिल्म की शूटिंग के लिए. एक दिन की छुट्टी थी इसलिए दोस्तों के साथ उनके कहते पर सेवालय देखने के लिए गई, साथ में सहकलाकार कश्यप परुलकर था. सेवालय के बच्चों से मैं मिली और अभिभूत हुई पसीज गई.....रवि बापट सर की निष्ठा को देखकर नतमस्तक हुई. मेरा भाई भी छत्तीसगढ में आदिवासियों के लिए काम करता है. उसके संघर्षपूर्ण जीवन को मैं देखने आई हूँ लेकिन रवि सर को युवा अवस्था में अपनाये गए रहनसहनको देखकर मैं रो पड़ी जिस क्षणभंगुरता से हम स्नेह करते हैं, सर उससे मुक्त कैसे हुए? इतने छोटे बच्चोंके माँ-बाप कैसे बन पाये? लोग किस साँचे से बनाते हैं? यह आखरी प्रश्न मन में उठा तो भी मैं उसे ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं मानती. क्योंकि ऐसे लोग हमारे जैसे ही बड़े हुए हैं सिर्फवे अपनी जिंदगी को कैसे जीना है इसका चुनाव करके जीते हैं. हमे जो अनुभव आए उस हिसाबसे वे अपनी अलग सी धारणा बनाते हैं

उसकी हिफाजत करते हुए उसकी वृध्दि करते हैं. और उसी प्रकार का व्यवहार करते हैं. ऐसे लोगों को हम 'पागल' कहते हैं. इससे होता क्या हैं? हम पर पड़ी हुई जिम्मेदारी से मुँह मोड़ना आसान होता है. मुझे लगता है. कि वास्तविकता से ये लोग ही समझदार होते हैं क्योंकि इसप्रकार का जीवन हम पागल होकर जी नहीं सकते उसके लिए परिस्थिति की समझ होना आवश्यक होता है.

सेवालय का संघर्ष मैंने सुना, आज के बदले हुए रुप को देखा, ईर्द-गिर्द की बदली हुई मानसिकताको (पॉजिटिव्ह) मैंने स्वयं महसूस किया. रविसर और उनके मित्र, शुभचिंतक, साथी और उनकी मेहनत को देखाऔर फिर से सेवालय जाने का मन होता रहा और मैं जाती ही रही. जिनकी बिल्कुल ही गलती नहीं ऐसे मासूमों को आधार देनेका, उन्हें उत्साह देने का व्रत बहुत ही समाधान देनेवाला है. मन को शांति देनेवाला है. मन को शांति देनेवाला है. बच्चों की सेवालय तक आने की बातों ने मुझे झकझोर दिया. एच.आय.व्ही. के कारण नही बल्कि लोगों कि उपेक्षा के कारण इतने छोटे बच्चों की हुई मृत्यु मन को संवेदनशून्य बना देती है.

हमारे ही सिनेमा के क्षेत्र की छिछली लैंगिकता, उसे प्राप्त होनेवाला समाज का सभी स्तर का दर्शक वर्ग, इंटरनेट पर दिखाई देनेवाले लैंगिकताने मचाया हुआ

भयंकर उधम और उसकी गाँव में, शहरों में फैलनेवाली गंदगी. इसे कोई भी आपत्तिजनक नहीं मानता. लेकन उसी लैंगिकताकि दुर्घटना से असावधान लोगोंसे और उनके बच्चों से असावधान क्षण में एच.आच.व्ही. ग्रस्त जीवन जीनेवाले लोगोंसे और उनके बच्चोंसे समाज किस प्रकार उपेक्षाका व्यवहार करता है. यह हमारे मन की लैंगिकता के बारे में विकृति नहीं तो और क्या है? भारतीय समाज व्यवस्था का मेरुदंड समझी जानेवाली नैतिक, एकनिष्ठ परिवार व्यवस्था के अंदर खदखदानेवाली मुक लैंगिकता, जो अवसर मिलते ही बाहर आती है. इसके बारे में हम खामोश रहते हैं. यह एच.आय.व्ही. हम में से किसीसे भी दूर नहीं हैं. हम सभी हमारे घरपर, परिवार पर, बच्चोंपर, समाजपर, देशपर प्रेम करते हैं. एच.आय.व्ही. यह रोग हुआ इसलिए उन्हें दूर क्यों धकेल देते हैं? हम उनकी उपेक्षा क्यों करते हैं यह एक गुस्सा अपनी सभी अच्छाई पर, कर्तृत्वपर पानी फेर देता है इसपर विचार करें.

जिस आयु में अपने घर में रहकर बच़पन का? आनंद का मज़ा लेना होता है.

है उस आयु में ये बच्चें प्रातःकाल जल्दी उठकर व्यायाम करते हैं, प्राणायाम करते हैं,(करना नहीं आता तो भी आँखों को बंद करके जोरजोर से शरीर को हिलाते हैं, प्रतिदिन बिना भूले ८-९ गोलियों खाते हैं. जिद्द नहीं, रोना नहीं मानो दूसरा कुछ हमारे लिए है ही नहीं जो भी सामने परोसा जाता है उसे व चुपचाप खाते हैं. रात को अकेले ही सोते हैं लेकिन सर के कंधोंपर खेलते रहते हैं. लगता है कि अगर ये यहाँ नहीं आते तो

उनका क्या होता था? फिर मैंने निश्चत किया कि चार दिन के लिए बाहर कहीं पर छुट्टी मनाने के बजाय यहाँ पर ही आना चाहिए.मेरे जन्म दिन के लिए में सुबह छः बजे गई थी.मेरे कमरे में २०-२५ बच्चें ....जन्मदिन मेरा, लेकिन उनकी खुशीका ठिकाना नहीं था!कितना निश्छल स्नेह...उन्होंने कहा हम आज पाठशाला नहीं जाएँगे. हा हा हा....

रवि सर ने कहा इन बच्चों का जीवन बढ़ेगा लेकिन उसके लिए उन्हें अच्छा खाना, नियमित रूपसे दवा लेना और सकारात्मकता ये तीन बातें उनके लिए महत्वपूर्ण है. बच्चों जितने खुश रहेंगे उतना उनकी सेहत के लिए अच्छा होगा लेकिन उन्हें निरंतर खुश रखना बहुत बड़ी चुनौती है. केवल उन्हें पुचकारकर, चूमकर नहीं चलेगा.

इन विचारों में मग्न थी तभी रवि सरने मेरे सामने एक प्रस्ताव रखा कि बच्चों के लिए आप सांस्कृतिक कार्यक्रमका आयोजन कर सकती हैं क्या ? तभी मुझे लगा कि यहाँ हम कुछ ऐसा काम करें कि जिससे बच्चोंको कुछ सिखा सकें कि आनंद कैसे प्राप्त किया जा सकता है. बाहर के लोग आते रहेंगे लेकिन स्वयं ही अपना दोस्त बनना इससे बढ़कर दूसरा कुछ भी नहीं. बहुत ही छोटे हैं ये बच्चें, लेकिन अभी से उन्हें यह आदत डाल सकते हैं.इतने छोटे कंधोंपर टूट पड़ी हुई वास्तविकता को थोड़ा कम करेंगे अथवा उसे नाकामयाब बनायेंगे....

इस विचार से ही ५से८ दिसंबर २०१३ सेवालय में सिर्फ एच.आय.व्ही. ग्रस्त बच्चों के लिए आयोजित मित्र'महोत्सव'संपन्न हुआ सेवालय के अतिरिक्त सहारा(कलंब),इन्फंटइंडिया(बीड),पालवी(पंढरपूर)और स्नेहाधार(उदगीर)इसप्रकार चार संस्थाओं में से एच.आय व्ही पॉझिटिव्ह बच्चों इस महोत्सव में सहभागी हुए थें. करीब-बरीब ८० बच्चे और सेवालय से जुड़े हुए दूसरे बच्चों को मिलाकर करीब-करीब १००लोग चार दिन सेवालय में इकट्ठे थे.

नटरंग, बालगंधर्व, बी.पी. सिनेमाके दिग्दर्शक रवि जाधव के सिनेमा में मैंने हाल ही में काम किया उसका नाम'मित्रा' यही नाम इस महोत्सव के लिए उचित रहेगा ऐसा मुझे लगा कि महोत्सव के निमित्त से जो भी अतिथि बच्चों से मिलेंगे बच्चों के मित्र बनें. अतिथि और बच्चों की व्यावहारिक दूरी दूर होनी चाहिए. इसलिए सर से चर्चा करके यह नाम देना निश्चित हुआ.और मुझे कहने में बहुत खुशी होती है कि मेरे जो भी कोई मित्र -सहेलियाँ मुंबई -पूना-लातूर से आए थें उन्होंने सचमुच बच्चों को मित्र कहा.

बच्चो के पसंद के अनेक विषय हैं. कला के, मनोरंजन के माध्यम से लेकिन बच्चो को अलग-अलग विषयोंकी जानकारी मिले इससे सबसे पहले इसमें उन्हें बड़ा मजा आएगा. केवल चार दिन के लिए ही नहीं बल्कि भविष्य में भी इसे याद करके उन्हें बेहद खुशी मिलेगी. उसमें से एक विषय उनकी पसंदका होगा तो आगे चलकर वे उसे अच्छीतरह से सीख सकेंगे अथवा एखाद कला की ओर किसतरह से देखें, उसे दाद किस प्रकार दें इस सीखकर वे अच्छे दर्शक-रसिक बनेंगे इस प्रकार का व्हीजन आखों

के सामने रखते हुए मैंने कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई.

इन चार दिनों में जादू के प्रयोग(शिरीष पोफळे और माधव बावगे, लातूर)वाद्योंकी जुगलबंदी(सागर साठे,विजय जाधव, सोमेश नावकर, मुंबई) कॉलिग्राफी(प्रविण लोहार, मुंबई)चित्रकला(अनिल जोशी,लातूर),पेटिंग तथा कठपुतलियोंका खेल.(प्रा. विनय बागडे,लातूर)कॉसिओवादन तथा स्त्रीभ्रूणहत्या तथा अंधोंकी समस्यापर व्याख्यान (चेतन उचितकर,वाशिम), लावणी नृत्य(स्नेहा तथा तनुजा शिंदे,लातूर)मंजिरी पुपाला,मुंबई(थिएटरगेम)गीत(रोहित राऊत, लातूर)और महोत्सव का मुख्य आकर्षण रहा मेरे फिल्मी परिवारका छोटा कलाकार उत्कृष्ट डान्सर और लिटल चॅम्प मिहीर सोनी, पूना, सेवालय से बच्चों को लेकर हासेगाँव से निकली हुई मशाल रॅलीसे महोत्सव को चार चाँद लग गए! सायंकाल के अंधेरे में 'भारत जोडो'का नारा देते हुए हाथों में मशाल लिये हम सब करीब-करीब तीन कि.मी. चलते रहे. मैं हाथ में मोमबत्ती लेकर जा रही थीं. तब घर के बाहर खड़ी औरंतों में से एक दूसरी से कह रही थी इन बच्चों को सब दूतकारते रहते हैं इसलिए लोगों के मन में स्थित अज्ञान के अंधःकार को मिटाने के लिए मानो यह मशाल रॅली है.

इतने अधिक कार्यक्रम थे कि बच्चों को लग रहा था कि क्या देखे और क्या ना देखें ! कार्यक्रम का आयोजन करते समय मन में धुकधुक थी उसे मेरे मित्र -सहेलियोंने पूरीतरहसे दूर की. क्योंकि वे जिस पध्दति से बच्चोंसे घुलमिल गए थे वह पध्दति कमाल की थी! इसके अलावा अपने अपने विषयोंका ही और अधिक दिनों का वर्कशॉप लेनेका वादा करने लगे.

महोत्सवके लिए जो वरिष्ठ व्यक्ति अतिथि रुपमें आए हुए थे उनके बारे में कुछ कहना चाहती हूँ - महोत्सव के उद्‌घाटन नॅचरल शुगर्स के अध्यक्ष बी.बी. ठोंबरे, वरिष्ठ पत्रकार शरद कारखानीस, सुर्यकांत वैद्य, प्रा,श्यामआगळे, संग्राम अप्पा इन सबकी काम के प्रति जो आस्था थी वह उनके व्यक्तित्व से ही झलक रही थीं. यह दिखावटी नहीं था. इसीलिए समापन समारोह के अतिथि जिला परिषद के सदस्य पाडुरंग चेवले, तथा राष्ट्रवादी काँग्रेस के जिल्हाध्यक्ष डी.एन. शळके,'मुक्तरंग प्रकाशन'के महारुद्र मंगनाले इन सबने बच्चों के लिए जो मदद की और आशीर्वाद दिये वह बहुमूल्य था. मैंने सिर्फ मुंबई से कार्यक्रमका आयोजन किया था लेकिन महोत्सव हर आयाम से कामयाब रहा था वह सेवालय के रणजीत-विद्या, प्रकाशदादा, सुमन माझी, शरद -संगीता,संतोष चव्हाण, शैलेश सिंदालकर मेरे इन मित्रो के कारण....

इतना बढ़िया आयोजन,१००-१२५लोगों के भोजन, नाश्ता, स्नान, रहने की व्यवस्था इतनी अच्छी, सेवालय से जुडे हुए इतने सभी स्नेही तथा उनका आत्मीयतासे लिया हुआ सहभाग,जो भी काम हो उसके लिए सदैव तत्पर रहने चले. सभी....एक भी दिन शोरगुल नहीं किसी के भी प्रति लापरवाही नहीं. यह सब कुछ इन छोटों के लिए था.

उनके प्रति रहनेवाला स्नेह ही सबको ऊर्जा दे रहा था. सचमुच, सेवाभावी संस्था की काम के प्रति आस्था, समानता यों तो कभी कभार दिखाई देती है. निराशाजनक वर्तमान की चीख चालू रहते समय सेवालय का यह चित्र बहुत ही आश्वासक था.मित्र महोत्सव की सफलता बच्चों की खुशी में थी. उन चार दिनों में बच्चे बेहद खुश थे इसलिए महोत्सव सफल रहा यह करना अनुचित नहीं होगा. लेकिन ये चार दिन उन्हें ओ सालभर कितना उत्साही रख पाएँगे इसपर महोत्सव की दीर्घकालीन सफलता निर्भर है. वह धीरे-धीरे मालूम होगा ही. लेकिन मेरे लिए ये चार दिन बिल्कुलही निराले, अद्भुत थे....अभिनय से भी अधिक खुशी मुझे इन चार दिनों में मिली. बच्चोंको कुछ देते देते मुझे ही कितनी खुशी मिली इसे अभिव्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं!बच्चें हमें कितना सिखाते हैं! बच्चें कितने सच्चे होते हैं!कार्यक्रम पसंद आया तो दिलो जान से देखते रहते हैं नहीं तो सीधा सो जाते हैं. ऊँगली दिखाकर बाहर निकल जाते हैं. पानी माँगते हैं. जिस कार्यक्रम में वे भाग लेते हैं. वह कार्यक्रम उन्हें अधिक अच्छा लगता है. केवल सुनना है या देखना है तो उनकी चुलबुलाहट शुरु होती है... ऐसे समय में उन्हे नज़रबंद करके बिठाना चुनौती है. मिहिर का डान्स देखकर कुछ बच्चोंने कहा''दीदी, सब खुद ही सीखा है क्या? उसे किसने सिखाया?'' महसूस किया कि उनकी सीखने की जबरदस्त चाह है लेकिन यहाँ तक कोई अध्यापक आने नहीं हैं. हमारी एक सहेली को कॅलिग्राफी सीखने की चाह हुई इस महोत्सव में मेरे पिताजी श्री मनोहर जामकर मेरे साथ थे. उन्होंने उसे कॅलिग्राफीका पेन भेज दिया. एक को एक पात्री प्रयोग करने की इच्छा है. एकपात्री प्रयोग की पुस्तकें उन्हें लाकर देने के लिए मेरे पिताजीने मुझे कहा.प्रा. विनय बागडेका विद्यार्थी ऋषिने कहा, ''सेवालय में बच्चों के लिए चित्रकला का वर्कशॉप मैं लेते रहूँगा'' चौथे दिन सेवालय के धीरज ने कहा ''दीदी, कलसे विद्यालय को जाना होगा क्या?''यह सुनकर मुझे हँसी आई मैंने कहा,'हाँ'''फिर मन में विचार आया विद्यालय बच्चों के 'मित्र'बने तो......

मेरे अत्याधिक व्यस्त कार्यों से मुझे मालूम हुआ कि साल के ये चार दिन अगले सालभर के लिए मुझे कितनी खुशियाँ देते रहेंगे!!! मैंने बच्चोंको खुशियाँ दीं या बच्चोंने मुझे खुशियाँ दी?यह अंतर ही समाप्त हुआ! मेरे जीवन के ये चार दिन इतने हसीन बनाने के लिए मेरे सभी छोटे बंधुओं के लिए तथा सेवालय परिवार के लिए हार्दिक धन्यवाद....!

अनुवाद -डॉ विजया वारद -रागा

मित्र......

वीणा जामकर,मुंबई
मराठी फिल्म अभिनेत्री
veena.jamkar @gmail.com

पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह

१० मई २०१५

इसबार आसाम में विशेष आयोजन

आयोजक

श्री हरीश भट्ट

कोकिला विकास आश्रम

ग्रा.पो.सोनपुर वाया-गोहपुर -784168,
जि. सोनपुर (आसाम)
harishbhatt132@gmail.com
mo. 09435563879 / 09435183391

अभी से इसे नोट कर समय पर रेल आरक्षण कर लें देश के किसी भी कोने से सिलीगुडी पहुंचें. एक दिन में दार्जीलिंग देखें और सिलीगुडी से गोहपुर के लिए रेल है. गोहपुर से आयोजक आपको ले जाएंगे.

इसी निमित्त उत्तर पूर्वी भारत देखना हो तो 7 दिन अतिरिक्त देकर प्रवास, निवास, भोजन खर्च के लिए रु. 7000 लगेंगे, गोहपुर तक का तथा वापसी का रेल खर्च स्वयं करना होगा. केवल 25 लोगों की व्यवस्था हो सकेगी उ.पू.भारत दर्शन के लिए. अतः रू. 7000 भेजकर आरक्षण करवाएं जनवरी 15 तक.

: यात्रा संयोजक :

हर्षद भाई रावल 08141973341

काव्य भारती - १ मराठी कविता

असली सवाल यही है कि....

-अशोक कोतवाल

- अनु.: प्रकाश भातंब्रेकर

परछाइयों के साथ ही
आक्रोश और विलापोंका
गला घोंट दिया जा रहा है
बेरहमी से

किस के हाथ जकड़ लें?
सवाल हत्या का नहीं,
हत्यारों और हथियारों का है,
जो निरन्तर बदल रहे हैं।
ग़मों से ग़मज़दा शब्द
और खतरों से लथपथ व्यवस्था
किसी पर कोई भरोसा करे तो कैसे?
सवाल व्यवस्था का नहीं !
उसमें रह रहे बाशिन्दों का है
जो हड़बड़ाये से हैं खालिस...

भूख की बुआई से
रजवाडों की फसल काट रही पीढ़ियाँ
दोष भला किसे दें?
सवाल पीढ़ियों का नहीं !
फसल को खून -पसीने से सींचनेवालों का
जो आज भी घिस रहे हैं
अपनी एडियाँ बिवाई फटने तक...

सवाल आपका -मेरा हम सभी का है
तथापि, असली सवाल तो उसी का है
जो पागल घोडे -सा हिनहिनाते हुए
सुलग उठे, पहल करे....

अनु-१२,न्यु रोजविल, गोरेवाडी,
पं.सातवलेकर मार्ग माहिम,मुंबई-४०००१६
मो. ०९३२४४०९४१०

आन्तर भारती के प्रकाशन
साने गुरुजी चित्रावली - १२० रु.
यति यदुनाथ - ५० रु.* *साने गुरुजी विशेषांक - ५० रु.
आन्तर भारती गीतमाला -१५ रु.* *कॅसेट / सी.डी. - ३० रु.
प्राप्ति स्थान : आंतर भारती संकुल
औराद शहाजानी - ४१३५२२ (महा.)
Mo. 09823156777 E-mail : aryavidyavanshi@gmail.com

(पृष्ठ १४ से...)

बाद में आंदोलन के कारण जा-जो सुख-दुख के प्रसंग हिस्से में आए तब-तब मुझे संवारने का काम लेखन न किया. मुझे लेखक के रूप में गढने में जितना हाथ कृषि की पार्श्वभूमि वाले मेरे परिसर का है, शेतकरी आंदोलन का है उतना ही वाहिनी का है.

सन २००७ के फरवरी मास में श्रीराम जाधव और शोभा शिरढोनकर इनकी बेटी बेनझीर के विवाह समारोह में लगभग पच्चीस -तीस वर्षों बाद औरंगाबाद में वाहिनी के सभी लोग मिले. बाद में मई में चेतना गाला और विजय सिन्हा के खेत में म्हसवड में मुलाकात हुई तब एक अनुभुति हुई. उस समय जो-जो वाहीनी में थें. सामान्यों से भिन्न राह अपनाने के कारण जिन-जिनको काफी कुछ सहना पडा, कठिनाइयों का सामना करना पडा, घरवालों से, समाज से अवहलना झेलनी पड़ी वे सब आज अलग अपनी -अपनी जगह, अपने-अपने गांव की नजरो में उँचे हैं. अन्यों से काफी अलग है इस दृष्टी से लोग काफी सन्मान के साथ उनकी ओर देखते हैं. सब का बडा नाम न भी हुआ हो, उनके पास गाडियाँ न हों बंगले न हों, बडा बँक बॅलन्स न हो, उस दरम्यान, एकदम युवावस्था में देखे सबसपने साकार हुए देखने का भाग्य न हो लेकिन उन्हें यह भान तो निश्चित है कि इस समाज को बदलने में मैंने कुछ न कुछ तो हाथ बंटाया है. कम से कम हमने समय के साथ संगति बनाए रखी है. जीवन के किसी भी मोड़ पर, किसी भी संकट के क्षण समझौते नहीं किये. जीवन में उतार चढ़ावों के मंडराने के कारण, निराशा की घाटी में फेंके जाने के कारण हास्यास्पद नहीं ठहरें. वाहिनी के लिए गुजारे ढिन जीवन के गुम हुए दिन हैं. ऐसा कहने की हताशा हमारे हिस्से में नहीं आय. श्री. गो. पु. देशपांडे के एक कथन के अनुसार ''आजुबाजु की कैाओं की भीड में...'' केवल इस प्रासाद -शिखर पर कौआ की भीड में कुछ गरुड थे, हैं. इसका भाग रहे ये उदास गरुड भात हैं. इसमें कोई संशय नहीं. मिडीया ऑफ़्रिटीज का भी एक जमाना होता हैं.उस जमानेमें तीव्र संवेदनाशीलता और दूरदर्शिता इनका अधिक तर पराभव होता रहता है. शिखरों को खुश रखकर अपनी सात्विकता सलामत

(क्रमशः)

रखने का ढोंग कुछ लोग करते हैं लेकिन वह चेष्टाएँ बड़ी हास्यापद सिद्ध होती हैं. हम ऐसे हंसी के पात्र नहीं बने. अरे!ये भी ऐसे ही ढोंगी निकले,ऐसा कहते हुए किसीने आजतक हमपर उस जमाने में तीव्र संवेदनाशीलता और दूरदर्शिता इनका अधिक तर पराभव होता रहता है. शिखरों को खुश रखकर अपनी सात्विकता सलामत रखने का ढोंग कुछ लोग करते हैं लेकिन वह चेष्टाएँ बड़ी हास्यापद सिद्ध होती हैं. हम ऐसे हंसी के पात्र नहीं बने. अरे!ये भी ऐसे ही ढोंगी निकले, ऐसा कहते हुए किसीने आजतक हमपर उंगली नहीं उठायी. इतना यश हमारे लिए काफी है. सबके लिए आज़ादी यावाहीनी की भाषा में ‘अपने पसंद’की जिंदगी यह ध्येय लेकर जीना काफ ी कठिन है. लेकिन मन की विशालता, दुर्दम्य उत्साह, धैर्य, निर्भयता ये बातें मनुष्य के पास हो तो वह कभी कुढ़ते नहीं बैठता. यह मजबुरी उसके हिस्से नहीं आती.व्यवहारी दुनिया में ऐसे व्यक्तियों को कोई होशियार नहीं कहता. उन्हें खुले दिल से बडप्पन भी कोई नहीं देता. लेकिन दिल का यह आशावाद लेकर चलनेवाले मनुष्य अपने आजु-बाजु हों तो हमें भी जीने में जोश आता है. वाहीनी के निमित्त अमर हबीब, सुधाकर, श्रीराम, जतीन, कुजबिहारी, मोहन, रविन्द्र मिलिन्द्र चंद्रकांत जैसे व्यक्तित्व मिले. ये लोग निश्चित बुद्धि के शंकालू मनवाले नहीं है. इनके साथ वार्तालाप करते समय, उनसे व्यवहार करते समय, उनकी बुध्दिमत्ता का, उनकी आयु का रोब मैंने कभी अनुभव नहीं किया. न कभी ऐसा लगा कि कोई अपने मत के प्रति इतना आग्रही है कि उसके साथ आगे के संभाषण की गुंजाईश नहीं हैं. ऐसे मनुष्य अपने चारों ओर हमेशा संख्या में बहुत ही कम होते हैं. लेकिन वे कई महान ग्रंथों का काम कर जाते हैं. वाहिनी ने क्या किया. तो एक हाथ की उंगलियों पर गिनने लायक व्यक्ति अपने आजूबाजू पैदा किए और हमारा जीना समृध्द बनाया.

धुनी तरूणाई (मराठी में)
संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब
पृष्ठ १६०, कीमत १५० रु.
प्रकाशक :परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई -४३१५१७ (महा.)

अनुवादक
ज्योतिराव लढ्ढके
चेतस, २२, बाजीप्रभु नगर,
नागपुर -४४००३३

राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली आयोजित
राष्ट्रीय एकात्मता एवं शांति युवाशिविर

1. THALASSARI, DIST. KANNUR (KERALA),
   RLY. Stn.THALSSERY.
   20-26 Dec. 2014
   Contact : Shri Karayil Sukumaran Mob. 09447482816
   e-mail : karayilsukumaran@yahoo.com

2. उडीसा
   जन. 2015
   संपर्क : श्री मधुसूदन दास मो. 08895799190

3. अहमदनगर (महा.).
   5-10 फरवर 2015
   संपर्क : श्री गोरख वेताल मो. 09822458744

4. कोकराझार (आसाम)
   फरवरी 2015

5. जम्मू (कश्मीर) - मार्च 2015

6. नई दिल्ली
   अप्रैल / मई 2015

के.सुकुमारन
विश्वस्त, रा.यु.यो.

कव्हर मुखपृष्ठ ३४०७ बाल महोत्सव लहरगागा (पंजाब)में भू.पू. मुख्यमंत्री भाषण देते हुए

मुखपृष्ठ २.१ ३४१७ बाल महोत्सव में प्रस्तुत राजस्थानी नृत्य

मुखपृष्ठ २.२ ३८३७ बच्चे कराटे करते हुए

मुखपृष्ठ ३.१ ३५ पृ. ३४११ भू. पू. मुख्यमंत्री(पंजाब)का बाल महोत्सव में स्वागत

मुखपृष्ठ ३.२ ३५ पृ. ३६७२बाल महोत्सव में सर्व धर्म प्रार्थना करते हुए

मुखपृष्ठ ४.१ ३६ पृ. ३५३१ बाल महोत्सव में ध्वज वंदन

मुखपृष्ठ ४.२ पृ.३६ ३४१६ बाल महोत्सव का प्रतीक चिन्ह (लोबो)

३५.२ बाल महोत्सव में बच्चे वाचन कक्ष में

३५.१

पृ.२ मिट्टी काम करते बच्चे

मु.पृ. ४ मुख्य मंच का एक दृश्य

मु. पृ. १ राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित बाल आनंद महोत्सव २०१४ लेहरगागा (पंजाब)का प्रवेश द्वार

पूज्य साने गुरुजी जयंती २४ दिस.